Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Article

डिजिटल युग में श्री अरविंद घोष की समग्र शिक्षा की प्रासंगिकता, संभावनाएं एवं चुनौतियां

नीलम देवी [1*], डॉ. अमित भारद्वाज [2]

[1] शोधकर्त्री, श्री वेंकटेश्वर यूनिवर्सिटी, गजरौला, उत्तर प्रदेश, भारत

[2] शोध पर्यवेक्षक, श्री वेंकटेश्वर यूनिवर्सिटी, गजरौला, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: * नीलम देवी

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.22158370

सारांश

वर्तमान समय को डिजिटल युग का रुप में जाना जाता है। इंटरनेट, कृत्रिम बुद्धिमता, डिजिटल, शिक्षण सामग्रीर, स्मार्ट कक्षा, ऑनलाइन शिक्षा, मोबाइल तकनीक ने शिक्षा के स्वरुप को व्यापक रुप से प्रभावित किया। आज विद्यार्थी विद्यालय चारदीवारी तक सीमित नहीं है। अपितु वह इंटरनेट के माध्यम से विश्व के किसी भी कोने में उपलब्ध ज्ञान पहुंचाया जाता सकता है। डिजिटल तकनीक का सही तरीके से किया गया उपयोग श्री अरविंद की शिक्षा दृष्टि अनेक उद्देश्यों को आधुनिक ज्ञान प्रदान कर सकता है। श्री अरविंद घोष शिक्षा को केवल सूचना या रोजगार प्राप्त करने का साधन नहीं मानते बल्कि मनुष्य के शरीर, प्राण, मन, अंत, चेतना को संतुलित एवं समन्वित विकाास को प्रक्रिया मानते हैं।

दूसरी तरफ तकनीक को शिक्षा का अंतिम लक्ष्य मान लेना ही श्री अरविंद घोष की समग्र दृष्टि के विपरीत हो सकता है। अतः डिजिटल शिक्षा को मानवीय मूल्यों आत्मानुशासन चिंतन रचनात्मक शारीरिक स्वास्थ्य और सयामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ना आवश्यक है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 07-07-2026
- **Accepted:** 26-08-2026
- **Published:** 29-08-2026
- **MRR:**4(8); 2026: 317-321
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

देवी नी, भारद्वाज अ. डिजिटल युग में श्री अरविंद घोष की समग्र शिक्षा की प्रासंगिकता, संभावनाएं एवं चुनौतियां. Indian J Mod Res Rev. 2026;4(8):317-321.

Access this Article Online

www.mrrjournal.in

मुख्य शब्द: श्री अरविंद घोष समग्र शिक्षा, डिजिटल युग, डिजिटल शिक्षा, व्यक्तित्व शिक्षा, शिक्षा की संभावनाएं शिक्षा की चुनौतियां।

© 2026 नीलम देवी, डॉ. अमित भारद्वाज. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन के विकास की सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को पढ़ना-लिखना सिखाना अथवा किसी व्यवसाय के लिये तैयार करना नहीं है अपितु उसे एक सक्षम विवेकशील उत्तरदायी मनुष्य बनाना भी हैं उन्होंने शिक्षा को मनुष्य के अंदर छुपी हुई शक्तियों के विकास की प्रक्रिया के रुप में देखा, उनके अनुसार वास्तविक शिक्षा बाहर से ज्ञान भरने की बजाय क्योंकि में पहले में में विद्यमान संभावनाओं को विकसित करने का कार्य करती हैं आज इक्कीसवीं सदी में डिजिटल तकनीक ने शिक्षा के स्वरुप को तेजी से बदला है। आज विद्यार्थी इंटरनेट के माध्यम से विश्व के विभिन्न स्त्रोतों से ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

ऑनलाइन पाठ्यक्रम डिजिटल पुस्तकालय वीडियो व्याख्यान स्मार्ट कक्षा कृत्रिम विद्धमता आधारित शिक्षा प्रणालियों शिक्षा को लचीला बनाने में सहायक है। भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी तकनीक के उपयोग बहुविषयक एवं समग्र शिक्षा भारतीयों भाषाओं में सामग्री की उपलब्धता पर जोर देती है।

2. अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का मूल उद्देश्य डिजिटल युग की बदली शैक्षिक परिस्थितियों के संदर्भ में श्री अरविंद की समग्र शिक्षा दृष्टि की उपयोगिता एवं सीमाओं का विश्लेषण करना है। अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार से हैं-

1. श्री अरविंद घोष की समग्र शिक्षा की मूल अवधारणा को पहचाना।
2. डिजिटल युग में शिक्षा के बदलते स्वरुप का अध्ययन करना।
3. डिजिटल तकनीक द्वारा समग्र व्यक्तित्व विकास द्वारा समग्र व्यक्तित्व विकास की संभावनाओं का अध्ययन करना।
4. डिजिटल शिक्षा के विद्यार्थियों के मानसिक भावनात्मक एवं सामाजिक विकास पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करना।
5. तकनीकी दक्षता और मानवीय मूल्यों के बीच संतुलन स्थापित करने की संभावनाओं का विश्लेषण करना।
6. डिजिटल युग के लिये श्री अरविंद को समग्र शिखा पर आधारित उपयोगी शैक्षिक सुझाव प्रस्तुत करना।

साहित्य समीक्षा एवं सैद्धान्तिक रुपरेखा - साहित्य समीक्षा शोध कार्य का महत्वपूर्ण चरण हैं। इसके माध्यम से विषय से संबंधित विचारों अध्ययनों एवं उपलब्ध सामग्री को समझा जाता है। प्रस्तुत विषय के संदर्भ में साहित्य को निम्न प्रमुख क्षेत्रों में विभाजित किया जाता है -

1. **श्री अरविंद के शिक्षा दर्शन से संबंधित साहित्य:** श्री अरविंद ने शिक्षा को व्यक्ति की अन्तर्निहित शक्तियों को विकसित करने की प्रक्रिया माना। उनके शिक्षा दर्शन में विद्यार्थी के स्वतंत्र विकास आत्म अनुशासन रचनात्मकता और चेतना के विकास को विशेष महत्व प्राप्त है।
2. **समग्र शिक्षा से संबंधित साहित्य:** श्री अरविंद की समग्र शिक्ष में व्यक्ति के पांच प्रमुख पक्षों शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, मानस एवं आध्यात्मिक के विकास पर बल दिया गया है। साहित्य के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि समग्र शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के विभिन्न पक्षों में संतुलन स्थापित करना है। इसमें विद्यार्थी को केवल परीक्षा या रोजगार के लिये तैयार करने की बजाए जीवन के लिये तैयार करने का अवधारणा दिखाई देती है।
3. **डिजिटल शिक्षा से संबंधित साहित्य:** डिजिटल शिक्षा से संविधित साहित्य यह दर्शाता है कि तकनीकी साधनों के ज्ञान के स्त्रोतों जो व्यापक बनाया है। विद्यार्थी अब समय और स्थान की पारंपरिक सीमाओं से बाहर जाकर सीख सकते हैं।
4. **समग्र शिक्षा और डिजिटल शिक्षा का संबंध:** साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन से यह संकेत मिलता है कि डिजिटल शिक्षा और समग्र शिक्षा को एक-दूसरे का विरोधी मानना उचित नहीं है। डिजिटल तकनीक ज्ञान और कौशल प्राप्त करने के साधन उपलब्ध कराती है जबकि समग्र शिक्षा उस ज्ञान के मानवीय और नैतिक उपयोग उपयोग की दिशा प्रदान कर सकती है।
5. **साहित्य समीक्षा से प्राप्त शोध अंतराल:** श्री अरविंद के शिक्षा-दर्शन तथा साहित्य में डिजिटल शिक्षा दोनों पर पर्याप्त सामग्री उपलब्ध है परंतु डिजिटल युग की वर्तमान परिस्थितियों विशेष रुप से कृत्रिम बुद्धिमता, डिजिटल निर्भरता, डिजिटल नैतिकता, सूचना की अधिकता और ऑनलाइन शिक्षा के संदर्भ में श्री अरविंद की समग्र शिक्षा की प्रासंगिकता, संभावनाओं एवं चुनौतियों का एकीकृत अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित दिखाई देता है।

श्री अरविंद घोष की समग्र शिक्षा की आवश्यकता:

श्री अरविंद ने समग्र शिक्षा का केन्द्र मानव व्यक्तित्व का पूर्ण विकास है। वे शिक्षा को व्यक्ति की अन्तर्निहित शक्तियांे को उनके अनुसार शिक्षा का कार्य विद्यार्थी पर केवल बाहरी सूचनाएं अपेक्षित करना ही नहीं अपितु उनके भीतर निहित क्षमताओं को विकसित करना है। इसे केवल विद्यालय या विश्वविद्यालय तक सीमित नहीं किया जा सकता है। उनकी शिक्षा दृष्टि से पांच आयाम निम्नलिखित है-

(क) शारीरिक शिक्षा: शारीरिक शिक्षा का सम्बन्ध शरीर के स्वास्थ्य शक्ति, अनुशासन, कार्य क्षमता से है। श्री अरविंद शरीर को शिक्षा का महत्वपूर्ण आधार मानते हैं। स्वस्थ्य शरीर के बिना मानसिक और बौद्धिक विकास भी पूर्ण रुप से संभव नहीं है। डिजिटल युग में में इसका महत्व और बढ़ जाता है क्यंोकि लेते समय से लंबे समय तक स्क्रीन देखने, शारीकि गतिविधि में कमी और निष्क्रिय जीवन शैली से विद्यार्थियों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। शिक्षा के साथ खेल, योग, व्यायाम आदि को जोड़ा गया है।

(ख) प्राणिक शिक्षा: प्राणिक शिक्षा व्यक्ति की भावनाओं, इच्छाओं, ऊर्जा, उत्साह, साहस और व्यवहार से संबंधित है। इनके अनुसार, व्यक्ति को अपनी भावनाओं और इच्छाओं को समझना और नियंत्रित करना सीखना चाहिए। डिजिटल वातावरण में विद्यार्थी लगातार विभिन्न प्रकार की सूचनाओं, मनोरंजन और सामाजिक प्रक्रियाओं से प्रभावित होते हैं।

(ग) मानसिक शिक्षा: श्री अरविंद के अनुसार केवल तथ्यों को याद करना मानसिक शिक्षा नहीं है। मानसिक शिक्षा का उद्देश्य मन को व्य,वस्थित व्यापक और नियंत्रित करना है। डिजिटल युग में, सूचना की अधिकता के कारण विद्यार्थियों के लिये सही-गलत सूचना में अंतर करना आवश्यक होता है। अतः मानसिक शिक्षा को डिजिटल शिक्षा के चिंतन से जोड़ा जा सकता है।

© 2026 नीलम देवी, डॉ. अमित भारद्वाज. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

(घ) आध्यात्मिक शिक्षा: श्री अरविंद की शिक्षा दृष्टि का उत्तम आयाम आध्यात्मिक विकास है। इसका धर्म किसी विशेष धार्मिक मत को थोपना नहीं है अपितु व्यक्ति में उच्चतर चेतना, सत्य, करुणा का भाव विकसित करना है। डिजिटल युग में तकनीक शक्ति के साथ नैतियां विवेक तथा विकास अत्यन्त आवश्यक है-

1. **डिजिटल युग और शिक्षा का बदलता रुख:** अब विद्यार्थी किसी भी स्थान में से डिजिटल माध्यमों द्वारा अध्ययन कर सकते हैं, ऑनलाइन पाठ्यक्रम वीडियो व्याख्यान, ई-पुस्तकें, कृत्रिम बुद्धिमता आधारित उपलब्ध नये साधन बन चुके हैं। इस शिक्षा के कुछ लाभ इस प्रकार हैं-

(क) ज्ञान तथा व्यापक पहुंच
(ख) समय और स्थान की बाधाओं में कमी
(ग) व्यक्तिगत गति से सीखने की सुविधा
(घ) डिजिटल कौशल का विकास
(ड़) शिक्षण में मल्टीमीडिया का प्रयोग
(च) अनुसंधान एवं सूचना संग्रह में सुविधा

भारत में डिजिटल शिक्षा अभी भी महत्वपूर्ण चुनौती है। इसलिए डिजिटल शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल तकनीक उपलब्ध कराना ही नहीं बल्कि ऐसी शिक्षा व्यवस्था बनाना होना चाहिए जिनमें तकनीक मानव विकास का साधन बने डिजिटल युवग में श्री अरविंद की समग्र शिक्षा की दृष्टि आज इसलिए महत्वपूर्ण है क्यांेकि आधुनिक शिक्षा में तकनीक और व्यवसायिकता के साथ-साथ मानवीय एवं नैतिक विकास की आवश्यकता है।

2. **समग्र व्यक्त्वि का विकास:** डिजिटल शिक्षा केवल ज्ञान और कौशल पर अधिक जोर देती है। श्री अरविंद कर समग्र शिक्षा अधिक जोर देती है। श्री अरविंद की समग्र शिक्षा हमे याद दिलाती है कि विद्यार्थी केवल ज्ञान तथा संग्रहकर्ता ही नहीं अपितु पूर्ण मानव व्यक्तित्व है।

3. **आलोचनात्मक चिंतन का विकास:** इंटरनेट पर उपलब्ध प्रत्येक सूचना सही नहीं होती। गलत अफवाह, कृत्रिम रुप से निर्मित सामग्रही के बीच सत्य को पहचानने के लिये आलोचनात्मक चिंतन करना आवश्यक है।

4. **अनुशासन:** डिजिटल उपकरणों का अत्यधिक उपयोग विद्यार्थी के समय और ध्यान को प्रभावित कर सकता है। समग्र शिक्षा विद्यार्थी में आत्मनियंत्रण विकसित करने पर बल देती है।

5. **मूल्य शिक्षा:** कृत्रिम बुद्धिमता और डिजिटल तकनीक के विकास के साथ नैतिक प्रश्न भी पढ़ रहे हैं। गोपनीयता कॉपीराइट, साइबर सुरक्षा, गलत सूचना, तकनीक निर्भरता जैसे विषयों पर विद्यार्थी में नैतिक समझ विकसित करना आवश्यक है।

डिजिटल युग में समग्र शिक्षा की संभावनाएं:-

श्री अरविंद ने समग्र शिक्षा के आधुनिक तकनीक के साथ जोड़ने की अनेक संभावनाएं हैं -

1. **व्यक्तिगत एवं अनुकूलित शिक्षा:** डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म विद्यार्थियों में गति, रुचि और आवश्यकता के अनुसार सीखने के अवसर प्रदान कर सकते हैं। इससे विद्यार्थी अपनी क्षमता के अनुसार अध्ययन कर सकता है। वैश्विक ज्ञान संपर्क इंटरनेट की दुनिया में विभिन्न शिक्षण संस्थान, पुस्तकालयों, शोध संसाधनांे तक पहुंच को आसान बना सकते हैं।
2. **बहुविषयक शिक्षा:** अरविंद की शिक्षा व्यक्ति के व्यापक विकास की समर्थन है। इनके द्वारा कला, साहित्य, भाषा, संगीत, सामाजिक विज्ञान को एक साथ सीखने की संभावना बढ़ी है।
3. **शिक्षक की भूमिका में परिवर्तन:** डिजिटल युग में शिक्षक केवल सूचना देने वाला व्यक्ति नहीं रह जाता, वह मार्गदर्शन, परामर्शदाता और सीखने की प्रक्रिया का सहायक बन सकता है। इसीलिये शिक्षक का कार्य विद्यार्थी की आंतरिक क्षमता को विकसित करने में सहायता करता है।
4. **कृत्रिक बुद्धिमता का विवेकपूर्ण प्रयोग:** एआई आधारित उपकरण विद्यार्थियों को व्यक्गित प्रतिक्रिया, भाषा सहायता, सामग्री प्रदान कर सकते हैं। एआई को विद्यार्थी स्वतंत्र रुप से विकल्प नहीं बनाना चाहिए।

डिजिटल युग में श्री अरविंद की समग्र शिक्षा के समक्ष चुनौतियाँ समग्र शिक्षा को डिजिटल वातावरण में लागू करना सरल कार्य नहीं है। इसके सामने कई व्यवहारिक एवं वैचारिक चुनौतियां हैं -

1. **डिजिटल विभाजन:-** सभी विद्यार्थी के पास समान नेट की सुविधा, स्मार्टफोन, कम्प्यूटर बिजली उपलब्ध नहीं है। यूनेस्को ने भारत में डिजिटल शिक्षा के प्रभावशीलता को प्रभावित करने वाले इन असमानताओं को रेखांकित किया है।
2. **स्क्रीन पर अत्यधिक निर्भरता:-** अत्यधिक स्क्रीन समय शारीरिक गतिविधियां सामाजिक संपर्क को प्रभावित करता है। इसलिए डिजिटल शिक्षा के साथ-साथ शारीरिक शिक्षा को संतुलित रखना आवश्यक है।
3. **सूचना की अधिकता:-** इंटरनेट पर अत्यधिक यात्रा में सूचना उपलब्ध है। विद्यार्थी के लिये उपयोगी सामग्री का चयन करना कठिन हो सकता है।
4. **नैतिक चुचुनौतियाँ:-** एआई और इंटरनेट के उपयोग से नकल, एलोगरिज्म गलत सूचना, गोपनीयता जैसी समस्याएं बढ़ा सकती हैं। समग्र शिक्षा इन समस्याओं का समाधान नैतिक एवं आत्मानुशासित व्यक्तित्व के विकास के माध्यम से खोज सकता है।
5. **शिक्षक प्रशिक्षण:-** डिजिटल साधनों के प्रभावी उपयोग के लिए शिक्षक को तकनीक दक्षता के साथ-साथ शैक्षिक और नैतिक समझ भी होनी चाहिए। केवल उपकरण उपलब्ध करा देना ही पर्याप्त नहीं है।
6. **आध्यात्मिक शिक्षा को डिजिटल रुप देना:-** श्री अरविंद की आध्यात्मिक शिक्षा व्यक्ति के आंतरिक अनुभव और आत्मचेतना से जुड़ी है। इसे केवल ऑनलाइन सामग्री या एप्प के माध्यम में पूरी तरह विकसित करना संभव नहीं है। इसके लिए आत्मचिंतन, अनुशासन, शांत वातावरण की आवश्यकता होती है।

© 2026 नीलम देवी, डॉ. अमित भारद्वाज. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

3. शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषात्मक पद्धति का है। अध्ययन मुख्यतः गुणात्मक दृष्टिकोण पर आधारित है जिसमें मुख्यतः उपलब्ध साहित्य के दस्तावेजों के आधार पर विषय का अध्ययन किया जा सकता है। श्री अरविंद के शिक्षा संबंधी विचारों का अध्ययन करके उन्हें डिजिटल युग की वर्तमान शैक्षिक परिस्थितियों के साथ जोड़ा गया है।

1. **अध्ययन के स्त्रोत:** अध्ययन के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोतों का उपयोग किया जा सकता है। प्राथमिक स्त्रोतांे में श्री अरविंद के मूल ग्रंथ, लेख, व्याख्यान तथा शिक्षा संबंधी विचार शामिल हैं। द्वितीयक स्त्रोतों में शिक्षा दर्शन की पुस्तकें शोधपत्र, शोध प्रबंध, शैक्षिक जर्नल, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, शैक्षिक सामग्री शामिल की गयी है।
2. **विषय-वस्तु विश्लेषण:** संग्रहित सामग्री का विषयगत विश्लेषण निम्न आधारों पर किया गया है

1. समग्र शिक्षा की आवश्यकता
2. शारीरिक शिक्षा
3. प्राणिक शिक्षा
4. मानसिक शिक्षा
5. मानस शिक्षा
6. आध्यात्मिक शिक्षा
7. डिजिटल शिक्षा
8. डिजिटल नैतिकता।

विश्लेषण एवं विवेचना: विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि अरविंद की शिक्षा दृष्टि वर्तमान डिजिटल युग में अत्यन्त उपयोगी हो सकती है। यद्यपि उनके समय में आधुनिक डिजिटल तकनीक उपलब्ध नहीं थी लेकिन उनके द्वारा प्रस्तुत शिक्षा जा मूल सिद्धांत आज भी मानव विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा है। उनकी शिक्षा का केन्द्र तकनीक साधन नहीं बल्कि मनुष्य का पूर्ण विकास है। इसीलिए डिजिटल तकनीक को शिक्षा का लक्ष्य न बनाकर मानव जीवन विकास का साधन माना जाना चाहिए।

शारीरिक शिक्षा की प्रासंगिकता: डिजिटल शिक्षा में में लंबे समय तक स्क्रीन के सामने बैठने के कारण विद्यार्थियों की शारीरिक गतिविधियां कम हो सकती हैं। श्री अरविंद की शारीरिक शिक्षा इस समस्या के समाधान की दिशा प्रदान करती है। डिजिटल अध्ययन के साथ खेल योग व्यायाम प्रकृति से जुड़े गतिविधियां और शारीरिक जम को शिक्षा का हिस्सा बनाया जाना चाहिए।

मानस शिक्षा की प्रासंगिकता: डिजिटल जीवन व्यक्ति को बाहरी दुनिया से लगातार जोड़ता रहता है। ऐसे वातावरण में आत्मचिंतन और आत्मबोध की आवश्यकता और अधिक बढ़ जाती है। मानस शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को आंतरिक व्यक्तित्व मूल्यों और जीवन के उद्देश्य को समझने की दिशा प्रदान कर सकती है।

आध्यात्मिक शिक्षा की प्रासंगिकता: डिजिटल तकनीक के विकास के साथ नैतिक प्रश्न भी बढ़ रहे हैं। कृत्रिम बुद्धिमता का अनुचित उपयोग, नकल, प्लेगरिज्म, गलत सूचना आदि की आवश्यकता को बढ़ाते हैं। श्री अरविंद की आध्यात्मिक शिखा व्यक्ति को सत्य, नैतिकता, आत्मानुशासन और उच्चतर जीवन मूल्यों की ओर प्रेरित करती है। इसीलिए डिजिटल तकनीक के जिम्मेदार उपयोग के लिए यह महत्वपूर्ण आधार बना सकती है।

विवेचनात्मक निष्कर्ष: डिजिटल तकनीक शिक्षा को अधिक सुलभ और व्यापक बना सकती है लेकिन वह स्वयं शिक्षा का अंतिम उद्देश्य नहीं है। शिक्षा का वास्तवित उद्देश्य ऐसे व्यक्ति का निर्माण करना है जो ज्ञानवान होने के साथ-साथ विवेकशील, संवेदनशील, रचनात्मक, आत्मानुशासित और नैतिक हो।
श्री अरविंद की समग्र शिक्षा इसी संतुलन की ओर संकेत करती है। उनके विचारों के आधार पर डिजिटल शिक्षा में तकनीकी दक्षता के साथ शारीरिक स्वास्थ्य, भावनात्मक संतुलन, मानसिक स्वतंत्रता, आत्मचेतना और नैतिक मूल्यों को जोड़ा जा सकता है।

अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष:
अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित प्रमुख निष्कर्ष सामने आते हैं -

1. श्री अरविंद की समग्र्र शिक्षा डिजिटल युग में प्रासंगिक है।
2. डिजिटल तकनीक व्यक्तिगत एवं आत्म अध्ययन के अवसर बढ़ाती है।
3. मानस और आध्यात्मिक शिक्षा तकनीकी विकास को नैतिक दिशा प्रदान करती है।
4. भविष्य की शिक्षा में तकनीक दक्षता और मानवीय मूल्यों का संतुलन आवश्यक है।
5. तकनीकी साधनों का प्रयोग समग्र विकास को प्रभावित करता है।
6. डिजिटल शिक्षा में शिक्षक की भूमिका समाप्त नहीं होती बल्कि शिक्षक मार्ग दर्शक और प्रेरक के रुप में अधिक महत्वपूर्ण होता है।
7. शारीरिक शिक्षा डिजिटल जीवन शैली से उत्पन्न निष्क्रियता का संतुलन कर सकती है।

4. सुझाव

डिजिटल युग में श्री अरविंद की समग्र शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिए कुछ सुझाव दे सकते हैं -

1. डिजिटल शिक्षा को शारीरिक शिक्षा से जोड़ना।
2. शिक्षा संवाद को बनाए जाए।
3. शिक्षा को केवल रोजगार केन्द्रित न मानकर जीवन केन्द्रित बनाया जाए।
4. भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़ा जाए।

5. निष्कर्ष

डिजिटल युग ने शिक्षा के सामने कई अवसर और चुनौतियां प्रस्तुत की है। तकनीक ने ज्ञान तक पहुंचने का आसान माध्यम बताया है लेकिन तकनीक ज्ञान व्यक्ति को पूर्ण दक्ष नहीं बना सकता। आज आवश्यकता ऐसी शिक्षा की है जो तकनीक क्षमता के साथ-साथ विवेक, आत्मानुशासन, रचनात्मकता का विकास करे।
अतः भविष्य की शिक्षा का आदर्श मॉडल मानव केन्द्रित डिजिटल शिक्षा होनी चाहिए। इसमें तकनीक साधन होगी और मानव शिक्षा जो

© 2026 नीलम देवी, डॉ. अमित भारद्वाज. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

श्री अरविंद की समग्र शिक्षा के मूल्यों आत्मविश्वास स्वतंत्र चिंतन अनुशासन नैतिकता और चेतना के विकास के साथ जोड़ा। आज के डिजिटल युग में एक अधिक सामाजिक संतुलित-संवदेनशील और सशक्त शिक्षा व्यवस्था में नियंत्रण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है।

समापन:-

डिजिटल युग में शिक्षा के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि तकनीकी विकास के साथ मानवीय विकास का संतुलन कैसे बनाया जाये? श्री अरविंद घोष की समग्र्र शिक्षा इस प्रश्न का महत्वूपर्ण है। उनकी शिक्षा दृष्टि के अनुसार व्यक्ति का विकास केवल बुद्धि या ज्ञान तक सीमित नहीं होनी चाहिए। डिजिटल तकनीक इन विकास प्रक्रियाओं को सहयोग प्रदान कर सकती है लेकिन उनका स्थान नहीं ले सकती जिनमें ज्ञान के साथ विवेक, तकनीक, कौशल के साथ नैतिकता, स्वतंत्रता के साथ अनुशासन और आधुनिकता के साथ मानवीय संवेदना का विकास हो। यहीं डिजिटल युग में समग्र शिक्षा की वास्तविकता प्रासंगिकता है।

संदर्भ सूची

1. Sri Aurobindo. On education. Pondicherry: Sri Aurobindo Ashram.
2. Sri Aurobindo. The human cycle. Pondicherry: Sri Aurobindo Ashram.
3. Sri Aurobindo. The foundations of Indian culture. Pondicherry: Sri Aurobindo Ashram.
4. The Mother. On education. Pondicherry: Sri Aurobindo Ashram.
5. Ministry of Education, Government of India. National Education Policy 2020. New Delhi: Ministry of Education; 2020.
6. Ministry of Education, Government of India. National Education Policy 2020 initiatives. New Delhi: Ministry of Education.
7. National Council of Educational Research and Training (NCERT). Sri Aurobindo evam Bharatiya shiksha sambandhi shaikshik samagri. New Delhi: NCERT.
8. UNESCO New Delhi. State of education report for India 2025. New Delhi: UNESCO; 2025.
9. UNESCO. Global education monitoring report 2023: technology in education. Paris: UNESCO; 2023.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Author

नीलम देवी श्री वेंकटेश्वर यूनिवर्सिटी, गजरौला, उत्तर प्रदेश, भारत में शोधकर्त्री हैं। उनका शोध क्षेत्र शिक्षा एवं सामाजिक विज्ञान से संबंधित है। वे अकादमिक अनुसंधान, अध्ययन और समकालीन शैक्षिक विषयों के विश्लेषण में रुचि रखती हैं। उनका उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शोध के माध्यम से ज्ञान के विकास और समाजोपयोगी निष्कर्षों में योगदान देना है।

© 2026 नीलम देवी, डॉ. अमित भारद्वाज. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/